10

पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों एवं दायित्वों का अध्ययन

निधि श्रीवास्तव*

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन एक वैकल्पिक विषय है। प्रस्तुत शोध प्रशिक्षणार्थियों के दो समूहों पर किया गया है जिसमें से एक ने इस विषय को एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना है तथा दूसरे समूह ने नहीं चुना है। शोध का उद्देश्य यह जानना है कि क्या इस विषय का अध्ययन प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने तथा उनमें पर्यावरण मूल्यों एवं दायित्वों को विकसित करने में सफल हुआ है?

मानव पर्यावरण का अभिन्न अंग है। पर्यावरण में वह सभी कुछ सम्मिलित है जो हमारे चारों तरफ़ है इसमें मानव, पौधे, जंतु, तथा सूक्ष्म जीव, खनिज तत्त्व, पानी, वायु आदि सभी कुछ सम्मिलित हैं। पर्यावरण में वे सारी बाहरी दशाएँ आ जाती हैं जो जीव के जीवन तथा विकास को प्रभावित करती हैं। प्रकृति से अत्यधिक छेड़छाड़ के कारण संसार में चारों तरफ पर्यावरण क्षय परिलक्षित है। पर्यावरण प्रदूषण, अम्ल-वर्षा, ओजोन क्षति, तापमान में वृद्धि आदि मनुष्यों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अवैज्ञानिक प्रयोग का ही परिणाम है। आज के दौर में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जन समुदाय में पर्यावरण जागरूकता के प्रति वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग की आवश्यकता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति का एक सफल साधन पर्यावरण शिक्षा है। इसके द्वारा शिक्षक, विद्यार्थियों में उचित अभिवृत्ति, मूल्य एवं दायित्व भाव उत्पन्न कर सकते हैं। 1992 के पृथ्वी सम्मेलन में भी 'पर्यावरण शिक्षा' को औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान देने पर

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, इलाहाबाद एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

जोर डाला गया है। पर्यावरण शिक्षा द्वारा जन-चेतना में वृद्धि को शिक्षकों के पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों में सम्मिलित किया गया है। शिक्षक ऐसा मानवीय संसाधन है जिस पर देश का भविष्य एवं विकास निर्भर करता है। वह विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा द्वारा उचित मूल्यों, अभिवृत्तियों का विकास सुगमता से कर सकता है परंतु इस हेतु शिक्षक समुदाय को भी पर्यावरण का ज्ञान, जागरूकता तथा कौशलों की जानकारी होना आवश्यक है। शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस विषय को वैकल्पिक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है जिससे इस विषय का प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षक, विद्यार्थियों में भी पर्यावरण प्रबंधन की योग्यता तथा कौशल विकसित कर सकें। शोधार्थी को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वर्तमान में बी.एड. पाठ्यक्रम में संचालित पर्यावरण शिक्षा का प्रशिक्षण कहाँ तक शिक्षक प्रशिक्षुओं को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने तथा उनमें पर्यावरण मूल्यों एवं दायित्वों को विकसित करने में सफल हुआ है। इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए पर्यावरण शिक्षा प्राप्त करने वाले और नहीं प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया।

फ्रेडरिक (1974) ने अपने अध्ययन में पाया कि बालकों में पर्यावरण अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन एवं जैविक मुद्दों के प्रति दायित्व परिवर्तन में सकारात्मक वृद्धि पर्यावरण अध्ययन के अनुदेशनों के परिणामस्वरूप थी। विल्सन और टोमेरा (1980) ने भी यह पाया कि पर्यावरण अध्ययन द्वारा दृष्टिकोण में परिवर्तन होता है। रेमंड (1975) ने बताया कि नैतिक मूल्यों का संबंध पर्यावरण ज्ञान से होता है। पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा पर्यावरण ज्ञान में सकारात्मक परिवर्तन होता है। (माकोविट्स, 1977 फ्रेडरिक, 1974 दुबे 1994) पर्यावरणीय उपागम (एक्जेमल, 1980), पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम 'नेचरस्कोप' (आर्मस्ट्रांग और अन्य 1991) एवं प्रतिभासी अधिगम उपागम (गोपालकृष्ण, 1992) का पर्यावरण ज्ञान के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण उपागम द्वारा पर्यावरणीय जागरूकता में वृद्धि होती है। (राजपूत, 1980 देवपुरिया, 1984) पर्यावरणी कार्यक्रमों द्वारा पर्यावरणीय अभिवृति में सकारात्मक परिवर्तन होता है (ज्विक 1978, विल्सन और अन्य 1980 क्राइस 1991)। सिब्ले (1974) ने पाया कि अनुकरण खेलों तथा पर्यावरण अनुदेशों द्वारा पर्यावरण अभिवृत्ति में परिवर्तन होता है। उपरोक्त अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा, व्यक्ति की पर्यावरणीय अभिवृत्ति, मूल्यों एवं दायित्वों में परिवर्तन लाया जा सकता है। यह शोध यह जानने हेतु किया गया है कि क्या पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के मूल्यों एवं दायित्वों में परिवर्तन आता है?

उद्देश्य

1. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों तथा दायित्वों का अध्ययन।
2. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों तथा दायित्वों के संबंध का अध्ययन।

परिकल्पना

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया–

1. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों तथा दायित्वों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों एवं दायित्वों में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान की कारणात्मक तुलनात्मक तथा सहसंबंधात्मक विधि द्वारा किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के समस्त शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यायादर्श

इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूट-डीम्ड यूनिवर्सिटी के 66 (40 पर्यावरण अध्ययन नहीं करने वाले और 26 पर्यावरण-अध्ययन के विद्यार्थी) शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रूप में चुना गया।

उपकरण

पर्यावरण मूल्यों के मापन के लिए के.एस.मिश्र द्वारा निर्मित 'पर्यावरण मूल्य मापनी' तथा दायित्त्व मापन के लिए स्वनिर्मित 'पर्यावरण दायित्त्व मापनी' का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण तथा गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध गुणांक की गणना की गई।

परिणाम एवं विवेचन

विश्लेषण के पश्चात् परिकल्पनाओं के परीक्षण निम्नलिखित हैं–

1. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण मूल्यों का अध्ययन–

इस हेतु 'पर्यावरण अध्ययन करने तथा इसे नहीं करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं होता है परिकल्पना निर्मित की गई। इसका परीक्षण टी-परीक्षण द्वारा किया गया। परिणाम को तालिका द्वारा दर्शाया गया है–

तालिका–1

पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में अंतर को दर्शाता टी-परीक्षण के परिणाम का सारांश

समूह	*संख्या (n)*	*मध्यमान*	*प्रमाणिक विचलन*	*टी-अनुपात*
पर्यावरण अध्ययन करने वाले	26	80.73	8.31	5.73*
पर्यावरण अध्ययन नहीं करने वाले	40	65.6	12.79	

*0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका-1 से स्पष्ट है कि टी. का परिगणित मान (5.73).01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अत: शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। स्पष्ट है कि दोनों समूहों में पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में अंतर है। पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण संबंधी मूल्य, पर्यावरण अध्ययन न करने वालों की अपेक्षा अधिक हैं। ऐसा इस कारण हुआ कि पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में जागरूकता एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन, विषय के ज्ञान के परिणामस्वरूप हुआ। फ्रेडरिक (1974) विल्सन और टोमेरा (1980) और रेमण्ड (1975) के अध्ययनों द्वारा भी इस बात की पुष्टि होती है।

2. पर्यावरण अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षार्थियों के पर्यावरणीय दायित्वों का अध्ययन

इस हेतु 'पर्यावरणीय शिक्षा प्राप्त करने वाले तथा इसे नहीं प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के पर्यावरण दायित्वों में अंतर नहीं है' की परिकल्पना का परीक्षण किया गया परिणाम तालिका-2 में प्रदर्शित हैं–

तालिका–2

पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले तथा इसे नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षार्थी के पर्यावरणीय दायित्वों में अंतर को दर्शाता टी-परीक्षण के परिणाम का सारांश

समूह	*संख्या (n)*	*मध्यमान*	*प्रमाणिक विचलन*	*टी-अनुपात*
पर्यावरण अध्ययन करने वाले	26	153.5	16.89	4.94*
पर्यावरण अध्ययन नहीं करने वाले	40	130.55	19.94	

*0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि टी का परिगणित मान, 4.94 है जो .01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान (2.66) से अधिक सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और कहा जा सकता है कि यह पर्यावरण शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरणीय दायित्व अधिक होता है। फ्रेडरिक (1974) के अध्ययन से भी इस बात की पुष्टि होती है कि पर्यावरणीय अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों के दायित्व भाव में परिवर्तन आता है।

3. पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण मूल्यों तथा दायित्वों में सहसंबंध का अध्ययन–

यह प्राक्कल्पित किया गया कि 'पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों एवं दायित्वों में सार्थक सहसंबंध नहीं होता है' इस परिकल्पना के हेतु गुणनफल आधूर्ण सहसंबंध गुणांक की गणना की गई। परिणाम तालिका-3 में दिखाए गए हैं-

तालिका–3

पर्यावरणीय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों तथा दायित्वों में सहसंबंध को दिखाती तालिका

समूह	*संख्या (n)*	*सहसंबंध गुणांक*
पर्यावरण अध्ययन करने वाले	26	0.72*
पर्यावरण अध्ययन नहीं करने वाले	40	0.67*

*0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि दोनों समूहों पर्यावरण अध्ययन करने वाले अथवा इसे नहीं करने वालों में पर्यावरण मूल्यों तथा दायित्वों के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। पर्यावरणीय मूल्यों में वृद्धि होने से पर्यावरणीय दायित्वों में भी वृद्धि होती है।

शैक्षिक निहितार्थ-

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों द्वारा स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय अध्ययन द्वारा शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लायी जा सकती है (फ्रेडरिक, 1974 माकोविट्स, 1977 दुबे, 1994 राजपूत, 1980 देवपुरिया, 1984)। नैतिक मूल्यों का संबंध, पर्यावरण ज्ञान से होता है। (रेमण्ड, 1975)। पर्यावरणीय अनुदेशों एवं कार्यक्रमों द्वारा पर्यावरणीय अभिवृत्ति में परिवर्तन लाया जा सकता है। (सिब्ले, 1974 ज्विक 1978, क्राइस 1991)। अतः शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरणीय अध्ययन विषय को वैकल्पिक विषय के स्थान पर अनिवार्य विषय कर देना चाहिए, ताकि राष्ट्र के भविष्य निर्माता शिक्षकों को इस विषय में पारंगत बनाकर उनमें जागरूकता, मूल्यों, अभिवृत्ति तथा दायित्व बोधका विकास किया जा सके। जब शिक्षक पर्यावरण मूल्यों एवं दायित्वों से परिपूर्ण होंगे, तो वे अपने विद्यार्थियों में भी उचित मूल्यों का विकास कर सकेंगे। अतः नीति निर्माताओं को इस संबंध में विचार करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

- फ्रेडरिक, सी.(1974). एन एनालिसिस ऑफ द इफेक्ट्स ऑफ ए स्पेसली डिजाइंड एंवायरमेण्टल स्टडीज कोर्स ऑन सेलेक्टेड अफेक्टिव करेक्टरिस्टिक्स ऑफ पोटेंशियल ड्रापआउट. डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट्स इण्टरनेशनल 135 (4), 2072
- विल्सन, आर. जे. और टोमेरा, आंद्रे. एन. (1980), एनरिचिंग ट्रेडीशनल बॉयलॉजी विद एन इनवायरनमेंटल पर्सपेक्टिव, जर्नल ऑफ इनवायरनमेंटल एजुकेशन, 12 (1), 12
- रेमण्ड जी.डी. (1975), मॉरल वैल्यूइंग एण्ड इनवायरनमेंटल वैरिएबल्स जर्नल ऑफ रिसर्च इन साइंस एजुकेशन, 1, 273-280
- मार्कोविट्ज, पी. एस. (1977), इनवायरनमेंटल एजुकेशन एण्ड रेजिडेंट आउटडोर एजुकेशन एक्सपीरियेंस डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इंटरनेशनल 4712
- दुबे, एस.पी. (1994) ए स्टडी ऑफ द एटीट्यूड टीचर्स एण्ड पेरंट्स टुवर्डस इनवायरनमेंटल प्राब्लम एण्ड यूजिंग वेल्यू शीट्स टू मॉडीफाइड इट, अप्रकाशित शोध प्रबंध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

- आर्मस्ट्रांग, जे.बी. और इंसपारा, जे. सी (1991) द इंपैक्ट ऑफ इनवायरनमेंटल एजुकेशन प्रोग्राम ऑन नॉलेज एंड एटीट्यूड जर्नल ऑफ इनवायरनमेंटल एजुकेशन
- गोपालकृष्ण, सरोजनी (1992) इंपैक्ट ऑफ इनवायरनमेंटल एजुकेशन ऑन द प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन, एम.बी. बुच (संपा) थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन में, नई दिल्ली,
- राजपूत, जे.एस. सक्सेना, ए.बी और यादव, वी.जी. (1980) ए रिसर्च स्टडी इन इनवायरनमेंटल एप्रोच ऑफ टीचिंग एट प्राइमरी लेवल, नई दिल्ली
- ज्विक टी.टी. (1978) एन इंवेस्टीगेशन इन टू अफेक्टिव विहेवियर ऑफ स्टूडेंट्स इन द इनवायरनमेंटल एजुकेशनल प्रोग्राम इन स्कूल डिसट्रिक्अ मोनटाना युनिवर्सिटी ऑफ नार्दन कोलेरैडो